पी.एम.श्री केन्द्रीय विद्यालय, कारवार

P.M SHRI KENDRIYA VIDYALAYA, KARWAR

स्कूल ई-पत्रिका

उपायुक्त महोदय का संदेश

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा को निखारने का सर्वोत्तम साधन है ।यह उनमें विचाराभिव्यक्ति और रचनात्मक अभिव्यक्ति कौशल का विकास करता है। यह विद्यालय की नैसर्गिक तसवीर होती है । यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कारवार सत्र **2023-24** के लिए विद्यालय पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त विद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं अनन्त शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

धर्मेंद्र पटले
उपायुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय , बेंगलुरु

अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति का संदेश

मुझे यह जान कर कर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कारवार विद्यालय पत्रिका 2023-24 का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों के लक्ष्य अर्जित हेतु एक सफल एवं सक्षम माध्यम का काम करती है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपनी कल्पना शक्ति विचार शक्ति एवं संवेदनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रधान करती है।

मैं इस उत्तम कार्य के लिए ज्ञान पिपासु विद्याथियों एवं विद्यालय के समस्त कर्मचारियों को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं कि वे अनवरत प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

कप्तान विवेक सिंह
कमांडिंग ऑफिसर।

आई एन एस कदम्बा,कारवार

संदेश

केंद्रीय विद्यालय परिवार व मेरी तरफ से बहुत ढेर सारी शुभकामनाएं सभी छात्र-छात्राओं को जिन्होंने बहुत मेहनत के साथ इस पत्रिका को बनाने में अपना सहयोग दिया। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में इसी प्रकार हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में पूर्ण सहयोग करूंगा। यह देखकर बहुत खुशी होती है कि हिंदी भाषा केवल वार्तालाप का माध्यम नहीं है बल्कि हमारे देश का एकता का प्रतीक है विभिन्न क्षेत्रों से आए छात्र-छात्राओं की इस जोश व उत्साह को देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है आप सभी को मेरा आशीर्वाद वह पूर्ण सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा जय हिंद जय भारत।

प्राचार्य ,
श्री अशोक कुमार
पी.एम.श्री केन्द्रीय विद्यालय, कारवार

विद्यालय पत्रिका सम्पादक मंडल

1. श्री अशोक कुमार - प्राचार्य
2. श्री हरि मोहन मीना - पीजीटी- हिन्दी
3. श्री दिनेश सिंह सोलंकी - टीजीटी- हिन्दी
4. श्रीमती दीपशिखा त्रिपाठी - टीजीटी -हिन्दी
5. श्रीमती स्मिता सांवत - कम्प्यूटर इन्स्ट्रक्टर
6. श्रीमती प्रियंका परदेशी - प्राथमिक शिक्षिका
7. ए आकाश राव (छात्र)
8. हनी (छात्रा)

सूची

सावित्री बाई	मुक्तिबोध
गौतम बुद्ध	चंद्रवरदाई
अर्जुन	लेखक
औरंगज़ेब	मुंशी प्रेमचंद
मेरी प्रिय अध्यापिका	लालची किसान
मां की ममता	संस्कार
पिता की नसीहत	बलिदान
बेटी का पिता	मेरा प्रिय विषय हिंदी
संत रविदास	मानवता
आलू सब की दोस्ती	सफलता की सलाह
मूर्ख बंदर	नन्ही पुकार
राजा और गडरिया	
देश का सिपाही	
जिंदगी की सच्चाई	
अनजान	
यह सबसे कठिन समय नहीं	
समय	
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	
भारतेंदु हरिश्चंद्र	

सावित्री बाई फूले

सावित्री बाई फूले कवयित्री के साथ-साथ समाज सेविका रही है 19वीं शताब्दी के दौरान महिला शिक्षा और शक्तिकरण में उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी सावित्री बाई उस वक्त की कुछ चुनिंदा साक्षर महिला में गिनी जाती थी ये डा.भीमराव अंबेडकर की ही तरह दलित वर्ग के लिए आवाज उठाने वाली महिला थी इन्होंने अपने जीवन में दलितों के हक के लिए खूब लड़ाई लडी,ये लड़ाई कुछ समाज के खिलाफ थी और कुछ सरकार के। इन्होंने महिला साक्षरता और बाल विवाह जागरुकता के प्रति बहुत अहम काम किए है। इन्होंने अपने पूरे जीवन में महिलाओं के अधिकार के लिए लडाई लडी है।

सोनिया 8वीं (ब)

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध जी का जन्म ईसा से 563 ई में लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था उनकी माता कपिलवस्तु की महारानी महामाया जो अपने घर जा रही थी तो रास्ते में लुंबिनी वन में बुद्ध जी को जन्म दिया| कपिलवस्तु और देवडा के बीच नौ तनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिणी देवी नामक स्थान के पास उसे समय में लुंबिनी वन हुआ करता था |उनका जन्म नाम सिद्धार्थ रखा गया सिद्धार्थ के पिता सुद्धोधन कपिलवस्तु के राजा थे और उनका सम्मान नेपाल ही नहीं समूचे भारत में था| सिद्धार्थ की मौसी गोतमी ने उनका लालन-पालन किया क्योंकि सिद्धार्थ के जन्म के साथ दिन बाद ही उनकी मां का देहांत हो गया |बुद्ध जी की शिक्षा वैसे तो सिद्धार्थ ने कई विद्वानों से अपने गुरु द्वारा कराया किंतु गुरु विश्वामित्र के पास उन्होंने चार वेद और उपनिषद पढ़े साथ ही राजकाज और युद्ध विद्या की भी शिक्षा ली |कुश्ती गुरुद्वारा तीर कमान रथ हाकने में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था

बुद्ध जी का विवाह शाक्य वंश में जन्मे सिद्धार्थ का 16 वर्ष की उम्र में दंड शाक्या कन्या यशोधरा के साथ हुआ| यशोधरा से उनको एक पुत्र भी मिला जिसका नाम राहुल रखा गया बाद में यशोधरा और राहुल दोनों ही बौद्ध धर्म को अपना के बौद्ध भिक्षु बन गए|

गार्गी 6C

अर्जुन

श्री कृष्णा चंद्र क्यों अर्जुन को इतना चाहते थे क्यों उनके प्राण धनंजय में ही बसते थे| यह बात जो समझ जाए उसे श्री कृष्ण का प्रेम प्राप्त करना सरल हो जाता है |प्रेम स्वरूप भक्त वत्सल श्याम सुंदर को जो जैसा जितना चाहता है उसे वह भी उसी प्रकार चाहते हैं |उन पूर्व काम को बल ऐश्वर्य धन या बुद्धि की चतुरता से कोई नहीं रिझा नहीं सकता| कृष्ण की कृपा से ही भीम जरासंध को भी मार सके| इतनी पर भी अपने मित्र अर्जुन को प्रसन्न करने के लिए युधिष्ठिर को 14 सहस्त्र हाथी भगवान ने भेंट स्वरूप दिया |जिस समय महाभारत के युद्ध में अपनी और से सम्मिलित होने का निमंत्रण देने दुर्योधन श्री द्वारका के भवन में गए थे उसी समय श्री कृष्णा सो रहे थे दुर्योधन उनके सिरहाने के पास बैठ गया ,और अर्जुन कुछ पीछे पहुंचे और हाथ जोड़कर श्याम सुंदर के श्री चरणों के पास नम्रता पूर्वक बैठकर भगवान ने उठकर दोनों का स्वागत सत्कार किया| दुर्योधन ने कहा मैं पहले आया हूं अतः आपको मेरी और आना चाहिए श्री कृष्ण ने बताया कि मैं पहले अर्जुन को देखा लीला मैं तनिक हंसकर कहा एक और तो मेरी नारायणी सेना है और दूसरी और मैं रहूंगा परंतु मैं जहां रहूंगा वहां हथियार नहीं उठाऊंगा आप में से जिसे जो अच्छा लगे वह ले ली किंतु मैं अर्जुन को पहले देखा है अतः पहले मांग लेने का अधिकार अर्जुन का रहेगा |एक और भगवान का बल उनकी सेना और दूसरी ओर शस्त्र हीन भगवान एक और भोग और दूसरी ओर श्याम सुंदर परंतु अर्जुन जैसे भक्त को कुछ सोचा नहीं पड़ा उन्होंने कहा मुझे तो आपकी आवश्यकता है मैं आपको ही चाहता हूं दुर्योधन बड़ा प्रसन्न हुआ |उसे अकेले शस्त्र रहित रहें श्री किसकी आवश्यकता नहीं जान पड़ी| भूख की इच्छा करने वाले विषय लोग इस प्रकार का गलतफहमी पाल लेते हैं विषम भोग का त्याग कर श्री कृष्ण को पाने की इच्छा उनके मन में नहीं जागती श्री कृष्ण ने दुर्योधन के जाने पर अर्जुन से कहा भला तुमने शास्त्रहीन अकेले मुझे क्यों लिया? तुम चाहो तो तुम्हें दुर्योधन से भी बड़ी सेना दे दो अर्जुन ने कहा प्रभु आप मुझे मोह में मत डालिए आपको छोड़कर मैं तीनों लोग का राज्य भी त्याग सकता हूं| मुझे आपके ज्ञान की आवश्यकता है ना कि आपके बल की|

केरल 8th बी

औरंगज़ेब

मुगल साम्राज्य के छठे सम्राट जिन्होंने 1658 से 1707 तक शासन किया| मह्- दीन मोहम्मद जिसे आमतौर पर औरंगजेब या आलमगीर नाम से जाना जाता है| यह एक सही नाम था| जिसका मतलब विश्व विजेता था |भारत पर राज करने वाला छठा मुगल शासक थाऔरंगज़ेब|

मुगल साम्राज्य के छठे सम्राट जिन्होंने 1658 से 1707 तक शासन किया| यह एक सही नाम था जिसका मतलब विश्व विजेता था |भारत पर राज करने वाला छठ मुगल शासक था बादशाह बनने के लिए औरंगज़ेब अपने तीन भाइयों तरसिक को मुराद बख्श और सहसूजा को रास्ते से हटाया| उनके बेटों को भी मार डाला औरंगजेब जब यह सब कर रहा था उसे दौर में उसे एक बड़े हिंदू राजा का साथ मिला| औरंगजेब के इस आदेश का जिक्र उसके दरबारी लेखक सारी मुस्तैद खान ने अपनी किताब मां आशीर ए आलम गिरी में बताया| 1965 में प्रकाशित वाराणसी गजेटियर के पेज नंबर 57 पर भी इस आधार आदेश का जिक्र है इतिहासकारों का मानना है कि इस आदेश के बाद सोमनाथ काशी विश्वनाथ केशव देव समेत सैकड़ो मंदिरों को गिरा दिया गया|

बुंदेला वीर छत्रसाल ने औरंगजेब को मरने का पूरा योजना बनाया |जिसे सफलतापूर्वक अंजाम दिया जैसे महाप्रभु जी ने कहा था ठीक उसी प्रकार शरीर पर एक चीर दिया जिससे वह औरंगजेब को 3 महीने तक बिस्तर पर तडपता रहा इस तरह से वह तड़प तड़प कब मरा |

जोशुआ 9th ए

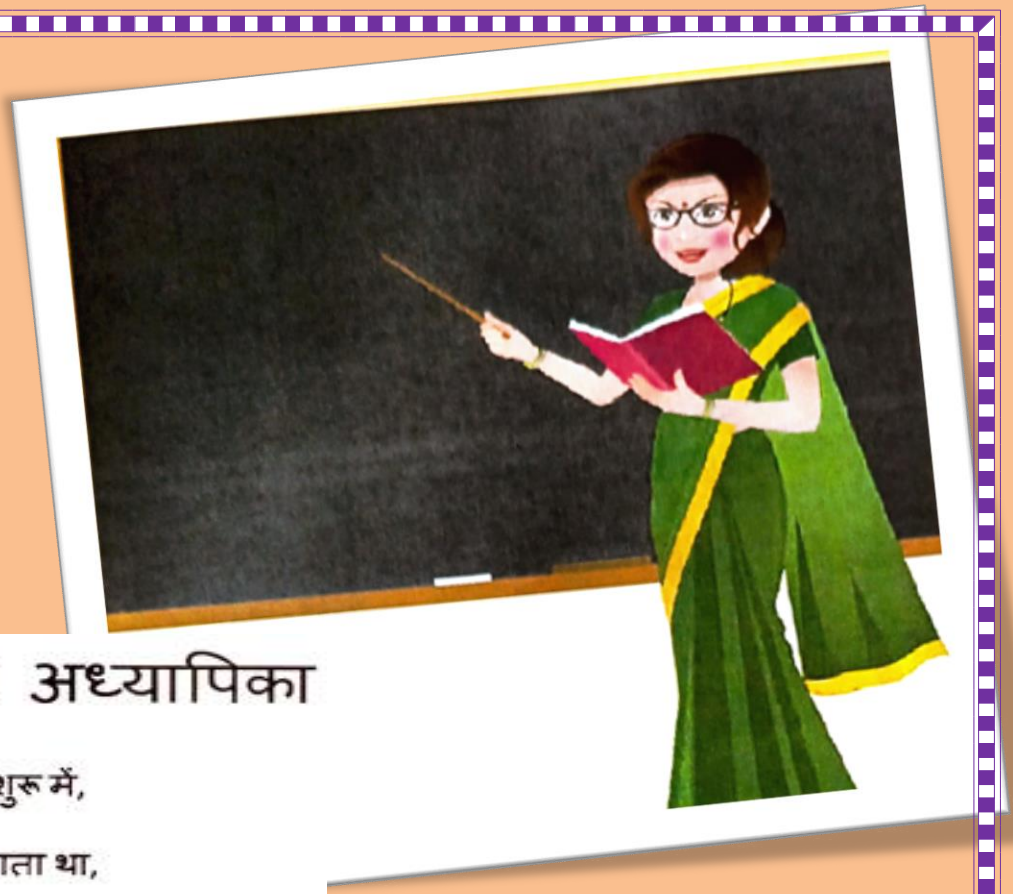

मेरी प्रिय अध्यापिका

घर छोड़ कर शुरू शुरू में,

स्कूल चला अब आता था,

मां को याद कर करके,

मैं बहुत आंसू बहता था।

फिर प्यारी अध्यापिका ने,

प्यार से मुझको समझाया।

मैं भी तो मां जैसी हूं।

कह कर मुझको सहलाया

अपनी प्यारी शिक्षिका को

धन्यवाद देना चाहता हूं।

आप हमेशा नन्हे मुन्ने,

के साथ बस ऐसे ही रहना।

तनुश्री क्लास 6c

बेटी का पिता

एक परिवार में तीन भाई थे तीन भाई में सबसे बड़ा वाले के दो बेटे और सबसे छोटे वाले के भी एक बेटा था पर बीच वाला जो भाई था उसकी दो लड़कियां थी |वह बहुत दुखी रहता था कि काश भगवान मुझे एक बेटा दे देता तो ज्यादा अच्छा रहता |समाज में और घर परिवार में सभी भाइयों की तुलना में उसे बहुत ही कम प्रेम और स्नेह दिया जाता था| क्योंकि उसे दो बेटियां पैदा हो गई थी धीरे-धीरे उसे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं? परंतु उसकी पत्नी कमला ने अपनी समझदारी से काम लिया| और अपने पति को एक मानसिक रूप से का समर्थन किया और समझाया कि आज के टाइम भी बेटियां किसी बेटों से कम नहीं है हम अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा दीक्षा देंगे जब वह कुछ बन जाएगी तो यही समाज यही परिवार हमारी बेटियों की इज्जत के साथ हमारे भी इज्जत करेगी| धीरे-धीरे समय बिता गया और तीनों भाइयों में सभी के बच्चे कुछ ना कुछ करने लगे लेकिन बीच वाले भाई की बेटियां समाज में अपना नाम रोशन किया और जिला कलेक्टर का पद मिला |बाद में दोनों भाइयों और परिवार को एहसास हुआ कि लड़का और लड़की चाहे कोई हो लेकिन शिक्षा दोनों को ही देनी चाहिए और लड़की होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं था कि वह किसी से कम होती है|

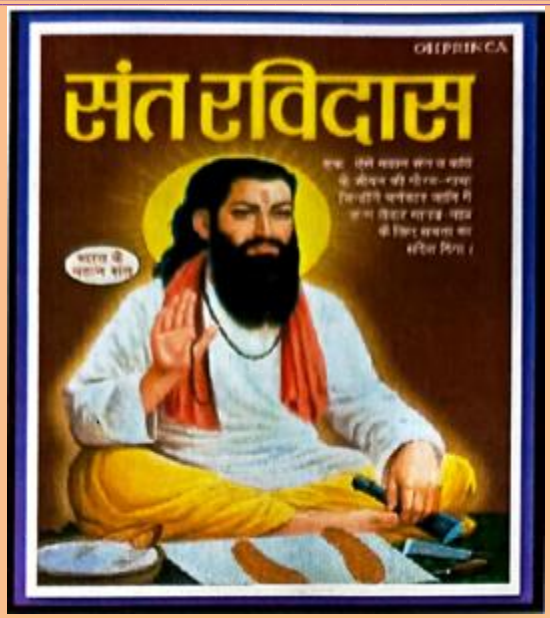

संत रविदास

संत शिरोमणी कवि रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा को 1376 ई को उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर के गोवर्धनपुर गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम कर्मा देवी (कलसा) तथा पिता का नाम संतोष दास(रग्घु) था। इनके दादा का नाम श्री कालूराम जी, दादी का नाम श्रीमती लखपति जी, पत्नी का नाम श्रीमती लोना जी और पुत्र का नाम श्री विजय दास जी है। गुरु रविदास अथवा गुरु रैदास मध्य काल में एक भारतीय संत कवि सतगुरु थे ।इन्हें संत शिरोमणि संत गुरु की उपाधि दी गई है। इन्होंने रविदासी, रैदासी पंथ की स्थापना की और उनके रचे गए कुछ भजन सिख लोगों के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में भी शामिल है। इन्होंने जात-पात का घोर खंडन किया और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया।

भूमिका पलिया 8वीं (ब)

1. आलू और सेब की दोस्ती

एक बगीचे में एक आड़ू और एक सब आपस में बहस कर रहे थे| दोनों अपने आप को अधिक सुंदर बता रहे थे| दोनों अपनी बात पर अड़े थे उन्होंने निर्णय के लिए खुली बहस करने का निश्चय किया | दोनों फलों के बीच तीखी बहस होने लगी बगीचे के सारे फल उनकी बातें सुन रहे थे तभी पास की झड़ी से एक काली बेरी ने अपना सिर उठाया और चिल्ला कर बोले तुम लोगों को बहस बहुत हो चुकी हमें नहीं लगता कि तुम लोगों का फैसला हो पाएगा इस बहस से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है अपने मतभेद बुलाकर हाथ मिलाओ और फिर से दोस्त बन जा शांति से रहने का यही सही तरीका है |

पूर्व प्रवीण भामरे 6A

मूर्ख बंदर

कुछ मछुआरे नदी के किनारे अपना दैनिक कार्य कर रहे थे| यह नदी में जाल डाल रहे थे और मछलियों को फसने का इंतजार कर रहे थे कुछ समय बाद उन्होंने थोड़े समय के लिए कम से ब्रेक लेने का फैसला किया वे अपने जाल किनारे पर छोड़कर दोपहर का भोजन करने के लिए किनारे से कुछ दूर चले गए एक पेड़ था| जिसकी डाली पर एक बंदर मछुआरा की इन सारी गतिविधियों को बड़े आश्चर्य से देख रहा था वह उन गंतिविधियों को की नकल करने के लिए बहुत उत्सुक था मछुआरे के चले जाने के बाद बंदर को मौत का मिल गया वह पेड़ से उतर गया और वही करने की कोशिश किया जो मछुआरे ने किया लेकिन जल से छूते ही वह उसमें फंस गया उसकी जान को खतरा था वह डूबने लगा अपनी जान बचाने की कोशिश करते हुए वह सोचने लगा कि उसे बिना सीखे मछली नहीं पकड़ता चाहिए अतः हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हर कार्य को करने से पहले अभ्यास करना चाहिए |

वैभवी जगताप कक्षा 8

राजा और गरेडिया

एक राजा था |उसे प्राकृतिक सौंदर्य को चित्र में कैद करना अच्छा लगता था |एक बार वह एक पहाड़ की चोटी पर चित्र बनाने के लिए गया चित्र बन जाने के बाद वह एक-एक कदम पीछे हटने लगा ताकि वह देख सके की चित्र दूर से कैसे लगता है पास ही में एक लड़का अपनी बकरी चरा रहा था उसने पीछे हटते हुए राज्य को देखा उसने सोचा कि यदि अब राजा एक कदम और आगे गया तो वह गिर जाएगा यह सोचकर लड़का भागता हुआ चित्र के पास गया और अपनी लाठी से चित्र को फाड़ डाला राजा को गुस्सा आया और कहा मूर्ख बालक तूने यह क्या किया अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा लड़के से सारी बात सुनने के बाद राजा ने कहा सच में यदि तुमने चतुराई से काम नहीं लिया होता तो मेरे प्राण नहीं बसते फिर राजा ने उसे पुरस्कार दिया उसे अपना प्रधान मंत्री बना लिया तो|

इसलिए अच्छाई का फल हमेशा अच्छा ही मिलता है|

अन्य एस नायर 8thC

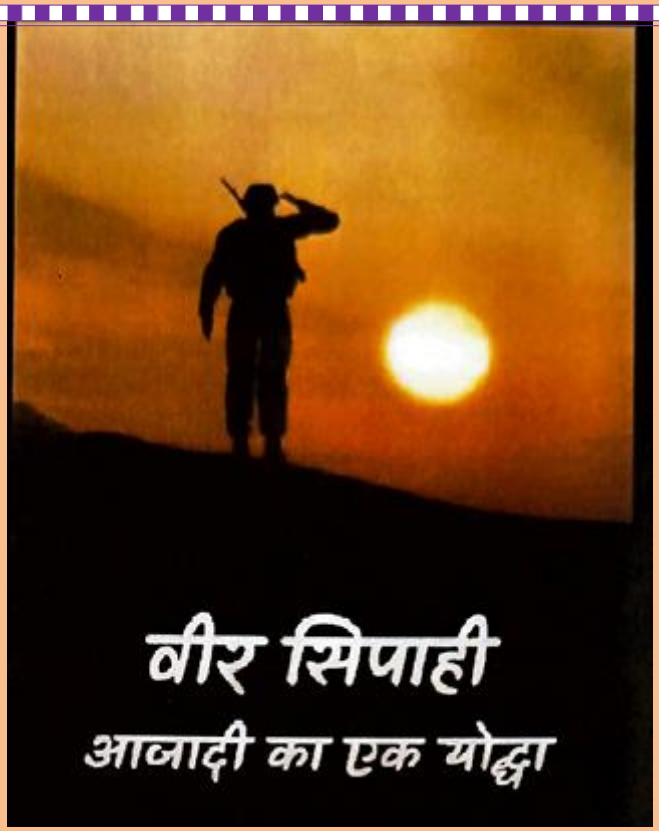

देश का सिपाही

एक रास्ता ऐसा भी है ,

जिस पर वीर शहीद चला

छोड़ अपने देश को वह दूर कहीं चला|

मैं अगले जन्म में फिर से आऊं दुश्मन अभी बाकी है

उसके अर्पण पर यह गीत धारा है कि।

आओ फिर से इसी धारा पर फौजी सा कहां?

गौरव मिलेगा? कहां धरती पर देश का सिपाही

बनकर| कर्ज अभी कुछ बाकी है कि फर्ज

अभी कुछ बाकी है, इस माटी का|

जिंदगी की सच्चाई

कल एक झलक जिंदगी को देखा वह राहों पर मेरी गुनगुना रही थी| फिर ढूंढा उसे इधर-उधर वह आंख मि चोली कर मुस्कुरा रही थी| एक अरसे के बाद आया मुझे करार वह साला बाद शांति मुझे सुला रही थी |हम दोनों क्यों खफा है एक दूसरे से? मैं उसे और वह मुझे समझ रही थी| मैंने पूछ लिया क्यों इतना दर्द दिया? कमबख्त तूने? वह हंसी और बोली मैं जिंदगी हूं पगले तुझे जीना सीख रही हूं| तन्हाई में भी बहुत सी अच्छाई है बिना बात हंसती है रुलाती है बड़े ख्वाब दिखलाता है क्योंकि तूने तन्हाई में भी बहुत सी की है अच्छाई अपने आप से मिलवाती है जिंदगी जीने का तरीका सिखलाती है आपकी याद दिलाती है बातें जो दफन हो गई यादों की कब्र में उसे खुद से मिलवाती है क्योंकि तन्हाई में भी बहुत सी अच्छाई है ख्यालों को गहराई में डुबोती है खुद पर भरोसा करना सिखलाती है क्योंकि तन्हाई में भी बहुत सी अच्छाई है|

वैष्णवी 8th C

अंजान

पूछा जो मैंने एक दिन खुद से अंदर में यह कैसा शोर है हंस मुझ पर फिर बोला चाहते तेरी कुछ और थी पर तेरा रास्ता कुछ और है रूह को संभालना था तुझ पर सूरत सवालने में तेरा जोर है खुला आसमान चांद तेरे चाहत है तेरी पर बंद दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है सपने देखता है खुली फिजाओं के पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है मैंने सजाया था तुझे अपने मुकुट में मनसा लेकिन तुम्हें ना हो सका उसका जरा भी फिकर अब क्या करें? कोई तुम्हारी सोच तो बदली नहीं? तुमको भी साथी चाहिए एक जादू धनवान सा |सोच बहुत रोका बहुत पर फिर भी देखो ना थामा आज भी उठना है दिल में एक बड़ा तूफान सा| देखते हो क्या मौका इसमें कोई घर नहीं एक खंडहर है फकत टूटा हुआ वीरान सा डोले जबकि मिली पर ना मिले घर साथिया मधुकर बना रहता है फिर इंसान एक अनजान सा|

अदिति 6a

यह सबसे कठिन समय नहीं

नहीं यह सबसे कठिन समय नहीं अभी भी दबा है ,चिड़िया की सोच में तिनका और वह उड़ने की तैयारी में है अभी भी जरती हुई पट्टी थामने को बैठा है हाथी अभी भी भीड़ है स्टेशन पर अभी भी एक रेलगाड़ी जाती है गंतव्य तक जहां कोई कर रहा होगा प्रतीक्षा अभी भी कहता कोई किसी को जल्दी आ जाओ कि अब सूरज डूबने का वक्त हो गया अभी कहां जाता है उसे कथा का आखिरी हिस्सा जो बुद्धि नई सुन रही सदियों से दुनिया के तमाम बच्चों को अभी आता है एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से लाएगी बचे हुए लोगों को की खबर नहीं यह सबसे कठिन समय नहीं।

स्मृति भट्ट क्लास 8th बी

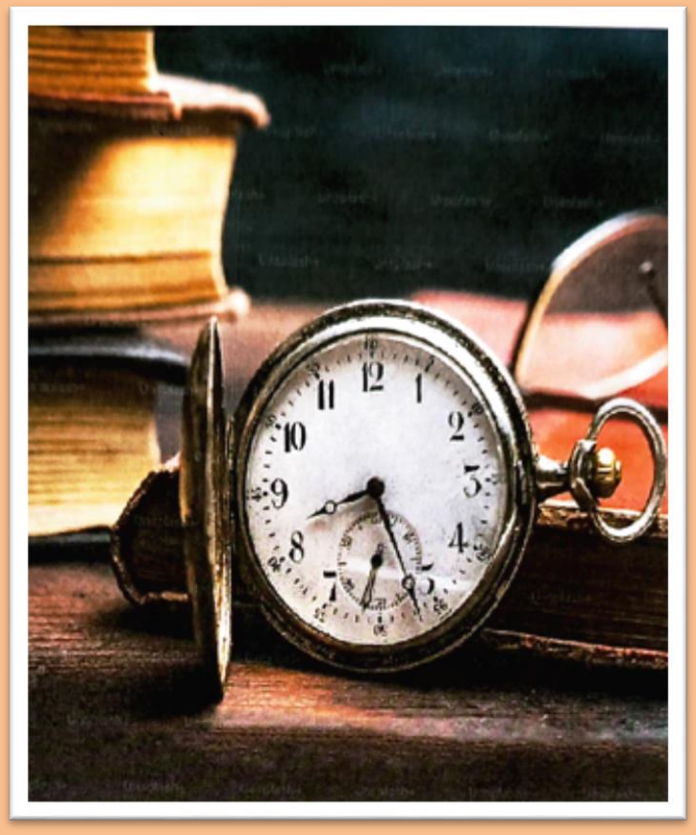

समय

मिलने की वह मुझे पल भर नहीं मिलता ,दिल उससे मिला जिससे मुकद्दर नहीं मिलता |आखिरी समय वह सातों का सलीका सा हो गया| चलते रहे तो रास्ता अपना सा हो गया| आईने में चेहरा नामा का देखा क्या? आंख जब उठे तो पर्दा सा हो गया| गुजरा था कब इधर से उम्मीद का यह सैलाब, हम इतने दिए जलाया फ़िर भी अंधेरा सा हो गया यूं ही दिल इंतज़ार को दिन भी हुआ रात भी हुई गुजरी कहा थी उम्र गुजर सा गया एक शाम एक मलालत सी आदत हो गई मिलने के इंतजार में मिलना सा हो गया| आखिरी समय का सलीका सा हो गया| चलते रहे तो रास्ता अपना सा हो गया| रुक गए तो वही समय चला गया|

Shifa 7th B

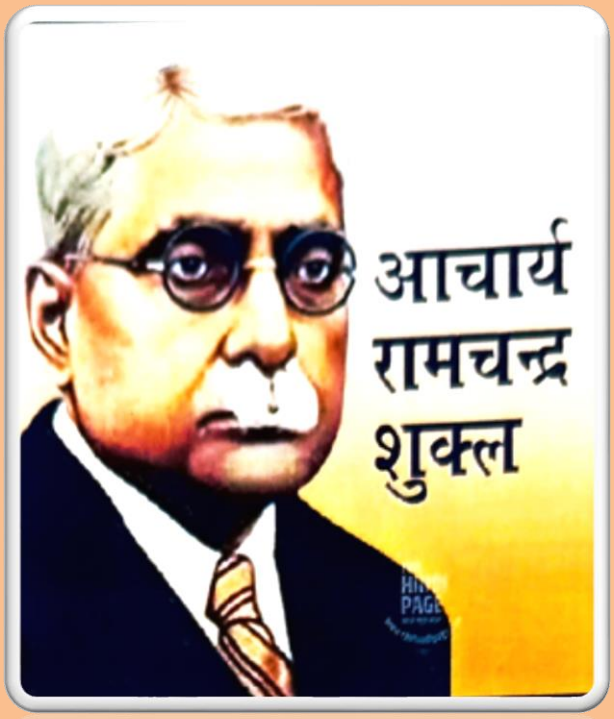

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

रामचंद्र शुक्ल का जन्म 1884 ईस्वी में उत्तर प्रदेश बस्ती जिले के आगुना नामक गांव में हुआ था |उनकी माता जी का नाम विभाषी था |और पिता चंद्रबली शुक्ल की नियुक्ति सदर कानूगो के पद पर मिर्जापुर में हुई तो समस्त परिवार वहीं आकर रहने लगा|जिस समय शुक्ला जी की अवस्था 9 वर्ष की थी| उनकी माता का देहांत हो गया| प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार एवं साहित्यकार इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का शुक्ला का हिंदी साहित्य में बहुत बड़ा योगदान था |रामचंद्र शुक्ल जी ने हाई स्कूल की परीक्षा मिशन स्कूल मिर्जापुर से पास की तथा इंटरमीडिएट की परीक्षा अंतिम वर्ष में ही छूट गयी| शुक्ला जी ने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी कर ली किंतु किसी कारण से उन्होंने वह भी छोड़ दी| बाद में मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गए |फिर इन्होंने हिंदी अंग्रेजी बंगाल आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया| पत्र पत्रिकाओं में लिखना आरंभ कर दिया उनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक पद पर हो गई बाबू श्याम सुंदर दास के पश्चात आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने |इसी पद पर कार्य करते हुए सन 1941 में हिंदी साहित्य के आलोचक पंच तत्वों में लीन हो गए|

खुशी नायक 8th बी

भारतेंदु हरिश्चंद्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था| उनके पिता गोपाल चंद्र एक अच्छे कवि थे| और गिरधर दास उपनाम से कविताएं लिखा करते थे |1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 7 वर्ष की थी यह दिन उनके आंख खुलने के थी| भारतीय हिंदी साहित्य और हिंदी रंगमंच के जनक माने जाते हैं| ब्रिटिश राज की शोषणकारी प्रकृति को दर्शाने वाले उनके लेखन के लिए उन्हें युक्त चरण के रूप में प्रतिष्ठित किया गया| रस उपनाम में लिखते हुए हरिश्चंद्र ने ऐसे विषयों को चुना जो लोगों के पीड़ा को दर्शाती थी |हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेंदु युग की संज्ञा प्रदान की गई है |और भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है |भारतेंदु का व्यक्तित्व प्रभावशाली था वे संपादक और संगठन करते थे| वह साहित्यकारों के नेता और समाज को दिशा देने वाले सुधारवादी विचारक थे| उनके आसपास तरुण और उत्साही साहित्यकारों को पूरी जमात तैयार हुई थी |अतः इस युग को भारतेंदु युग की संज्ञा देना उचित है| डॉक्टर लक्ष्मी सागर वासुदेव ने लिखा है कि प्राचीन से नवीन के संक्रमण काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र भारतवासियों को नवोदित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थे| यह भारतीय के भारतीय अग्रदूत कहलाए हिंदी साहित्य के जिस समय खड़ी बोली गद्य अपने प्रारंभिक रूप में थी उस समय साहित्य की रचना की|

अर्णव क्लास 9th ए

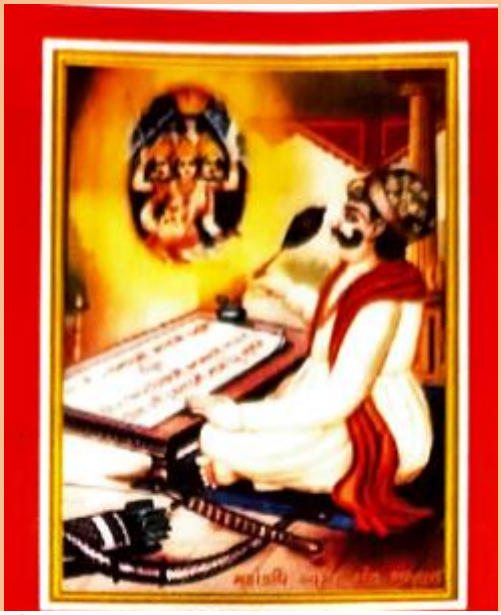

चंद्रवरदाई

चंद्रवरदाई का जन्म लाहौर में हुआ था| बाद में वह अजमेर दिल्ली के सुविचार हिंदू नरेश पृथ्वीराज का सामान्य शाखा हुए| इनका वास्तविक नाम बाली था| बाद में राजकवि और सहयोगी हो गए थे| इससे उनके अधिकांश जीवन महाराजा पृथ्वीराज चौहान के साथ दिल्ली में बीता था| वह राजधानी और युद्ध क्षेत्र सब जगह पृथ्वीराज के साथ जा रहे थे| उसकी विद्यमानता का काल 13वीं सदी है| चंद्रवरदाई का प्रसिद्ध ग्रंथ पृथ्वीराज रासो है| इनकी भाषा को भाषा शास्त्रियों ने पिंगल कहा है| जो राजस्थान में ब्रजभाषा का पर्याय है| इसलिए चंद्रवरदाई को ब्रजभाषा हिंदी का प्रथम महाकवि माना जाता है| रासो की रचना महाराज पृथ्वीराज के युद्ध वर्णन के लिए हुई है| इससे उनके वीरतापूर्ण युद्धों और प्रेम प्रसंग का कथन है| अतः इसमें वीर और श्रृंगार रस दोनों रस की ही प्रधानता रखी गई |चंद्रवरदाई ने इस ग्रंथ की रचना प्रत्यक्षदर्शी के भांति की है लेकिन शिलालेख प्रमाण ऑन से यह स्पष्ट होता है कि इस रचना को पूर्ण करने वाला कोई अज्ञात कवि है जो चंद्र और पृथ्वीराज के अंतिम चरणों को देखा है चंद्रवरदाई ने इस ग्रंथ पूर्ण किया|

चंद्रवरदाई को हिंदी का पहला कवि माना गया |और उनकी रचना पृथ्वीराज रासो को हिंदी की पहली रचना होने का सम्मान प्राप्त हुआ| पृथ्वीराज रासो हिंदी का सबसे बड़ा महाकाव्य ग्रंथ है |जिसमें 10000 से अधिक छंद है |और तत्कालीन प्रचलित 6 भाषाओं का प्रयोग किया गया है इस ग्रंथ में उत्तर भारतीय क्षत्रिय समाज व उनकी परंपराओं के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है| इस कारण ऐतिहासिक दृष्टि से भी इसका बहुत महत्व है वे भारत में अंतिम हिंदू समाट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के मित्र थे तथा राज कवि थे पृथ्वीराज ने 1165 से 1192 तक अजमेर व दिल्ली पर राज किया यही चंद्रवरदाई की रचना कल भी था|

अलमान अली शेख 8th c

शिव गंगा 9th ए

एक लेखक

लेखक व्यक्तिगत या पेशेवर रूप में लेखन करने वाला व्यक्ति होता है जो किताबें कविताएं कहानियां निबंध जानकारी अनुभव या अनिल लिखित काम की रचना करता है वह विभिन्न विषयों पर लिख सकते हैं जैसे की कविता कहानी उपन्यास विज्ञान साहित्य ऐतिहासिक लेखन प्रेरणादायक पुस्तक की अनुसंधान पत्रिकाएं विज्ञान लेखन प्रौद्योगिकी लेखन या किसी और प्रकार की रचनाएं लेखक अपने विचारों विचारधाराओं और अनुभव को शब्द के माध्यम से आधिकारिक रूप से व्यक्त करते हैं ताकि दूसरे लोग उनके काम को पढ़ सके और समझ सके लेखक की कौशलता और साहित्यिक दृष्टिकोण उनके लेखन की गुणवत्ता और प्रभाव को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें विभिन्न प्रकार की प्रतिस्पर्धा में सफल होने की संभावना होती है लेखक का काम ज्ञान और मनोरंजन को बढ़ावा देने का माध्यम भी हो सकता है पर समाज में अपने ज्ञान से लोगों के विचारधाराओं को बदलने का भी जज्बा होता है लेखक का काम लेखन करना होता है जिसमें विभिन्न प्रकार की रचनाएं बनाते हैं यह कुछ मुख्य कार्य क्षेत्र और गतिविधियां है जिसमें लेखक लगे रहते हैं

1- किताब लिखना लेखक किताब लिखने हैं और जो विभिन्न प्रकार की हो सकती है ।

2 कविता लिखना कुछ लेखक कविताएं लिखते हैं जो भाषा और रचनात्मक तरीके से व्यक्ति की भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति करती है।

3- जानकारी लिखना लेखक जानकारी के क्षेत्र में लेखन कर सकते हैं जैसे की विज्ञान तकनीकी इतिहास स्वास्थ्य या किसी के विषय पर लेख लेखन का जीवन परिचय भी हो सकता है।

4- अनुभव साझा करना कुछ लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभव यात्राओं या अन्य घटनाओं को लिखकर साझा करते हैं ताकि दूसरे लोग उनसे सीख सके या उनके साथ सहभागी हो सके।

5- पत्रिका लेखन कुछ लेखक पत्रिकाओं वैक्सीन ब्लॉक या अन्य प्रकार के प्रकाशनों के लिए लेख लिखते हैं।

6- स्क्रीन प्ले लेखन कुछ लेखक सिनेमा या टेलीविजन के लिए स्क्रीन प्ले लिखते हैं जो फिल्म और टीवी शो के लिए कहानी का आधार बनाते हैं।

7- संपादन लेखक अक्सर अपने लिखे गए काम को संपादित करते हैं ताकि वे ग्रामर शैली और संरचना के मामले में सुधार कर सके।

8- व्यक्तिगत ब्लॉगिंग कुछ लोग अपने व्यक्तिगत ब्लॉग्स पर अपने विचार अनुभव और दृष्टिकोण साझा करते हैं।

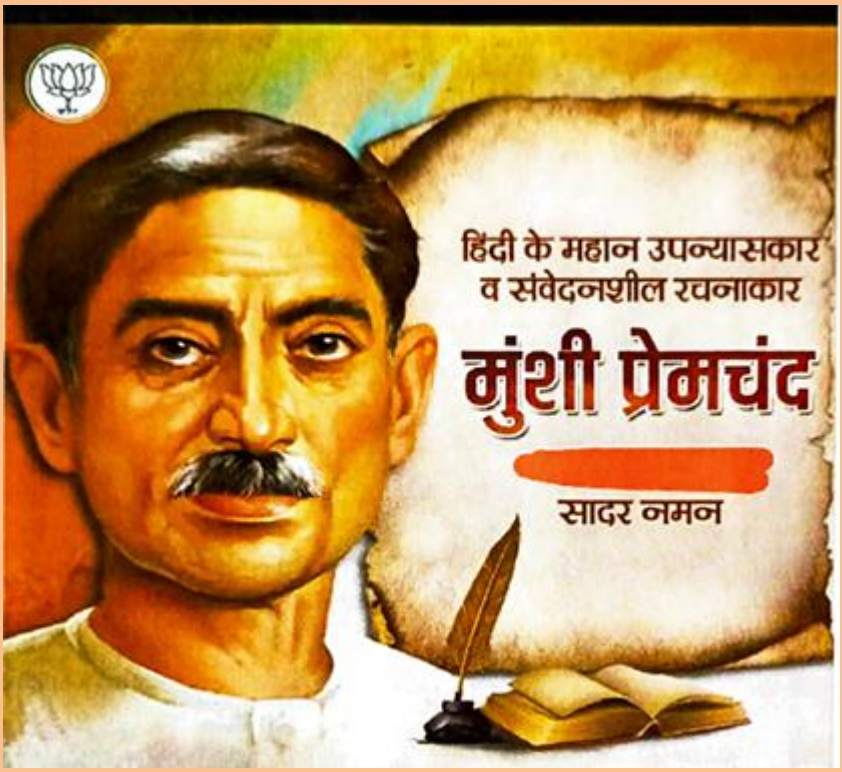

मुंशी प्रेमचंद

हिंदी साहित्य में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले लेखकों में से एक मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1980 को लमही वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ था| उन्होंने अपनी साहित्य जीवन में लगभग दो दर्जन उपन्यास और लगभग 300 से अधिक कहानी लिखी थी| इस लेख में मुंशी प्रेमचंद की जीवन की कहानी और उपन्यास के बारे में जानते हैं| अगर ऐसा कहा जाए कि जब तक देश और विश्व में हिंदी साहित्य बना रहेगा मुंशी प्रेमचंद का नाम सदा अमर रहेगा तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी मुंशी जी सदाबहार प्रसिद्ध का कारण उनकी कहानियों उपन्यासों में समय को मात देने का हुनर था| उनकी कई कहानियां जैसे बड़े भाई साहब 1910 में ईदगाह 1933 में कफन और 1936 में लिखी गई थी लेकिन यह सब आज भी जीवित है| इन सब कहानियां को आज भी पढकर लगता ही नहीं है कि यह कहानी 80 से 90 साल पहले लिखी गई थी|

दिव्या 7th बी

लालची किसान

एक गांव में एक किसान रहता था| लालच के कारण वह सदा दुखी रहता था| उसके पास घर जमीन जायदाद सभी थे |पत्नी और बच्चे भी थे| खेत और पशु भी थे| पर वह धन पाने के लिए हमेशा बेचैन रहता था |एक दिन वह जब खेत में हल जोत रहा था ,तभी पेड़ के नीचे वह विश्राम करने लगा| वहां पर एक महात्मा गुजरे किसान ने उन्हें प्रणाम किया, और उन्हें अपना भोजन खिला दिया ,तथा ठंडा जल पिलाया महात्मा किसान की सेवा से प्रसन्न हो गए और उसे एक मुर्गी दे दी| वह मुर्गी प्रतिदिन एक सोने का अंडा देने लगी |जिससे किसान बहुत खुश हुआ| एक दिन उसके दिमाग में ख्याल आया क्यों ना इस मुर्गी का पेट काट दिया जाए ताकि सारा अंडा हम ले सके और उसने चाकू से उसका पेट काट दिया जिससे वह मुर्गी तुरंत मर गई और किसान के हाथ कुछ न आया|

लोकेश 6A

संस्कार

नई

दिल्ली चलने फिरने में असमर्थ रिटायर मेजर जनरल का घर के कमरे में फर्श पर बिस्तर लगा दिया गया और नौकरों को की कह दिया कि इनका पूरा ख्याल रखना हमें कोई शिकायत ना मिले| बेटों को नई-नई शादियां हुई थी एक बेटा गर्मी की छुट्टियां बिताने फ्रांस चला गया और दूसरा बेटा लंदन और जहां भी जाते अपना परिचय मेजर जनरल के बेटे होने से शुरू करते और अपने वाह वाह ही में बताते| नौकर को चेतावनी दे रखी थी कि पिताजी के कमरे के अलावा सारे कैमरा लॉक करके रखना| एक दिन उनका नौकर बाजार से सब्जी लेने के लिए गया और रास्ते में है उसका एक्सीडेंट हो गया और वह नौकर अपने मालिक को एक कमरे से आगे से बंद कर दिया क्योंकि वह चलने फिरने में असमर्थ थे | वह नौकर कोमा में चला गया |

मलिक उसे कमरे में अकेला पड़ा रहा और उसकी मौत हो गई 2 महीने बाद उसके दोनों बच्चे लौट कर आते हैं और अपने पिता को मृत देखते हैं तो ऐसे संस्कारों का क्या करना जो अपने माता-पिता को छोड़कर उनकी इज्जत नहीं करते और सिर्फ दिखावे में जो जीते है|

आदि 8C

गजानन माधव (मुक्तिबोध)

गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर 1917 को तात्कालिक मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित सहियापुर कस्बे में हुआ था |स्वतंत्रता के पश्चात प्रगतिशील काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि मुक्तिबोध कहानीकार और समीक्षक भी थे| इन्होंने प्रगतिशील कविता और नई कविता के मध्य सेतु के भाती कार्य किया| मुक्तिबोध के पिताजी पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे| और नौकरी के कारण उनका तबादला होता रहता था| जिससे मुक्तिबोध की पढ़ाई में दिक्कत आने लगी उन्होंने इंदौर के होल्कर विश्वविद्यालय से बी. ए करने के बाद मॉडर्न स्कूल में अध्यापन का कार्य भी किया| कॉलेज की पढ़ाई के दौरान सहपाठी शांताराम से की दोस्ती हो गई| बाद में शांताराम यही गेट की ड्यूटी पर तैनात हो जाते हैं| शांताराम के साथ कई घुम्मकड़ी के दौरान प्राप्त अनुभव का प्रभाव उनके लेखिका जीवन पर भी पड़ा| मुक्तिबोध ने छोटी सी आयु में ही पढ़ना शुरू कर दिया था| बड़नगर के मिडिल स्कूल में अध्यापन करने के बाद वर्ष 1940 में मुक्तिबोध सुजालपुर के शारदा शिक्षा सदन में पढ़ने लगे |इसके बाद उज्जैन ,कोलकाता ,इंदौर मुंबई ,बैंगलुरु ,बनारस तथा जबलपुर आदि जगहों पर उन्होंने नौकरी की| इसी बीच 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब शारदा शिक्षा सदन बंद हो गया तो वह उज्जैन चले गए| इस दौरान उन्होंने भिन्न-भिन्न नौकरियों की स्थाई नौकरी न होने के कारण उन्हें आर्थिक तंगी से भी जूझना पड़ा| उनकी पत्नी शांत मुक्तिबोध ने विभिन्न साक्षात्कारों में इस बात को स्वीकार किया कि गजानंद मुक्ति हमेशा परिवार बच्चे और जीवन यापन को लेकर परेशान रहते थे| नौकरी बदलने के दौरान ही उन्होंने सूचना व प्रसारण विभाग में भी काम किया| इसके बाद आकाशवाणी से भी जुड़े रहे साप्ताहिक पत्र नया खून को भी संपादन किया| इसी वर्ष 1954 में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से पर|स्नातक भी किया |मुक्तिबोध की नौकरी की तलाश का अंत तब होता है जब 1958 में दिग्विजय महाविद्यालय राजनंदन गांव में प्राध्यापक के पद पर उन्हें नियुक्त करते हैं |यदि आप मुक्तिबोध के काव्य पाठों को उनकी जुबानी से ही सुनते तो आप एक अलग ही दुनिया में चले जाते| उनके द्वारा काव्य पाठ को समाप्त किए जाते तो ऐसा प्रतीत होता था कि कोई बेहद डरावनी फिल्म देखी है और अब चेतना अवस्था में लौट आए हैं |मुक्तिबोध अपनी कविताओं में ऐसे बम संसार की रचना करते मानो उसकी किसी नाट्य मंच पर त्रासदीपूर्ण नाटकों का मंचन चल रहा हो| इनको पढते हुए आपको मैक्सिकन भिति चित्रों का अवलोकन जैसे कि चांद का मुंह टेढा का बहुत ही बेहद खूबसूरत चित्रण किया|

कार्तिक 9th ए

मेरा प्रिय विषय हिंदी

भारत में रहने वाली एक बड़ी जनसंख्या अपनी आम बोलचाल की भाषा के लिए हिंदी भाषा का इस्तेमाल करती है| भाषा के माध्यम से ही हम एक दूसरों के शब्दों और विचारों को समझ पाते हैं |वैसे जिस भाषा का हम इस्तेमाल करते हैं वह संस्कृति और उर्दू से मिली हुई एक भाषा है जिसका इस्तेमाल भारत में काफी लंबे समय से किया जा रहा है |हालांकि भारत एक विशाल देश है और यहां अलग-अलग राज्यों अलग-अलग भाषाएं बोली जाती है| लेकिन 26 जनवरी 1950 को जब भारत का संविधान बनाया गया तब हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया| हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ ही मातृभाषा भी है हम लोग बचपन से हिंदी बोलने पढने सुनने के काम मे लाते हैं| लेकिन जब हम बड़े हो जाते हैं तब हम लोग अंग्रेजी भाषा को महत्व देना शुरू कर देते हैं यही हमारा करियर प्रारंभ करने का जरिया बन जाता है |अंग्रेजी का ज्ञान होना आवश्यक है लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि आप अंग्रेजी को अपना सर्वश्रेष्ठ बनवा ले |हिंदी हमारी मातृभाषा है हम मन से ही हिंदी के प्रति उदासीनता की भावना लेते आते हैं |पर यह सही नहीं है| हिंदी हमारे देश का गौरव है और एकता का प्रतीक है|

सुरभि 8th c

बलिदान

देवभूमि से जानी गई ,

वीर भूमि कहलाने लगी,

कितने वीर शहीद हो गए ,बेड़िया गुलामी में कटने लगी ,क्या गांव में वीर गाथा गाता अपने वीर जवानों की ?पानी जैसा रक्त बहा,दुश्मनो नापाक इरादो को वीरो ने नाकाम किया,कितने घर बेघर हुए मां की गोद सुनी हो गई, कितनो का सिंदूर मिट गए मां भारती की गाथा अमर हो गई|

भूमिका 8th B

सफलता की सलाह

राम नाम के नौजवान ने नया व्यापार शुरू किया था। उसे व्यापार के विषय में कुछ भी अनुभव नहीं था, इसलिए वह काफी नुकसान झेल रहा था। एक दिन उसे एहसास हुआ कि, मुझे किसी और व्यापारी की सलाह लेनी चाहिए जिससे मेरे व्यापार में मुझे ज्यादा फायदा मिल सके, तभी उसे याद आया कि, उसके मित्र संपत ने भी उसके साथ में ही व्यापार शुरू किया था। क्यों न उससे ही सलाह ली जाए। फिर राम उसी दिन संपत के पास पहुंच गया। लेकिन संपत एक बड़बोला इंसान था। उसने राम के साथ बहुत सी इधर-उधर की बातें की और अंत में व्यापार के विषय में भी कुछ सलाह दी। राम ने संपत की व्यापारी सलाह पर अमल भी किया पर व्यापार अभी भी घाटे में ही चल रहा था। फिर राम को अपने एक पुराने दोस्त शिरीष की याद आई जो वहां व्यापार 10 साल से कर रहा थ, और एक सफल व्यापारी भी था। राम ने ज्यादा समय न गवाते हुए शिरीष की सलाह ली। शिरीष ने बड़ी ही आसान और सरल भाषा में राम को व्यापारी सफलता के नुस्खे बताएं जिन पर अमन करने से राम को कुछ ही महीने में व्यापार में फायदा होने लगा।

शिक्षा : सफलता की सलाह हमेशा सफल और अनुभवी लोगों से ही लेनी चाहिए बड़बोले लोग हमें भड़काते हैं।

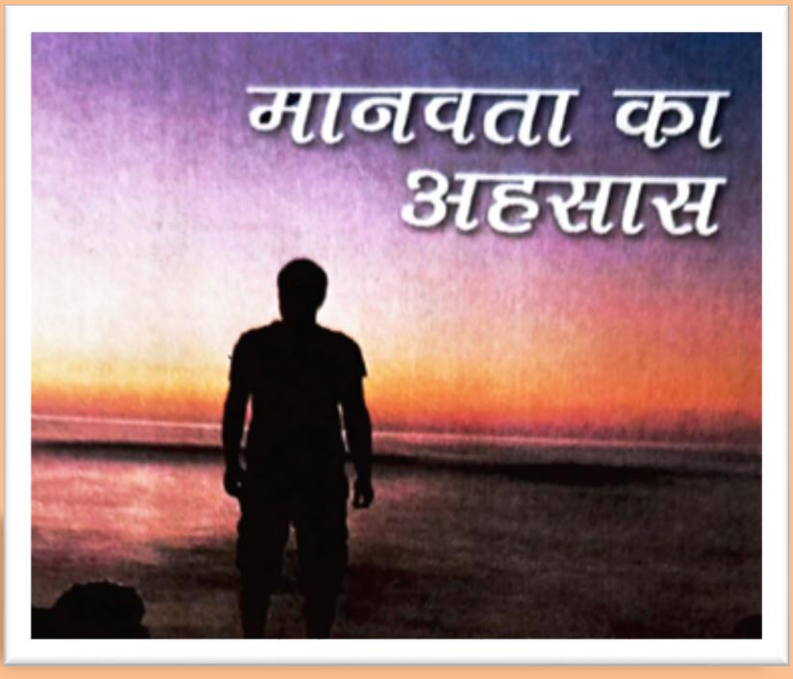

मानवता

एक व्यक्ति के चार बच्चे थे चार धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे पिता एक सरकारी नौकरी में कर्मचारी था |समय बिताता चला गया बच्चे बड़े हो गए धीरे-धीरे वह बच्चे अपने-अपने जीवन में व्यस्त हो गए| बूढ़ा पिता अकेले रह गया साल में कोई एक बार छुट्टी आता था तो अपने पिता की सेवा करता था | अन्यथा वह 11 महीने अकेले ही व्यतीत करता था| एक दिन वह सब्जी लेने गया रास्ते में उसे एक छोटा बालक जूते को पॉलिश करते हुए ?दिखा उसने उसे बच्चे का नाम पूछा उसे बच्चों ने अपना नाम मोहन बताया| बूढ़ा व्यक्ति बोला बेटा आपके माता-पिता नहीं है क्या जो आप इस उम्र में शिक्षा लेने की जगह जूते पॉलिश कर रहे हो मोहन ने कहा साहब अगर जूते पोलिश ना करें तो अपना पेट कैसे भरा पाऊंगा ?पढ़ाई लिखाई तो दूर की बात है| बूढ़े व्यक्ति को तरस आया उसने उसे बच्चों को अपने घर ले आए उसको खाने को दिया और उसके बाद कहा क्या बेटा आप पढ़ाई करना चाहते हो ? बालक ने हां बोल |उसको पढ़ाया लिखाया | मोहन उसकी सेवा भी करता था और साथ में रहता था |तो उसे बूढ़े व्यक्ति का भी मनोरंजन हो गया| धीरे-धीरे समय बिता चला गया और वह व्यक्ति मोहन एक आईपीएस ऑफिसर बन गया उसका इंटरव्यू हुआ | मोहन से पूछा गया कि आपका यह अधिकारी बनने के पीछे किसका योगदान है ?उसने बोला कि यह सब मुझे रास्ते से उठाकर ले आने वाले की है आज उन्हीं की कृपा से मैं अपने जीवन में सफल हो पाया हूं आज वह हमारे बीच में नहीं है लेकिन अगर वह यह काम ना करते तो शायद मैं अपने जीवन एक जूता पॉलिश करने में बीतता लेकिन कहते हैं ना खून के रिश्ते से ज्यादा एक दया का भाव होता है इसीलिए हर व्यक्ति को कहीं ना कहीं अपने से मजबूर व्यक्ति की मदद कर देने चाहिए हो सकता है कि जिसकी मदद कर रहे हैं वह भी मेरी तरह काबिलियत रखता हो|

सृष्टि कुमारी 6A

नन्ही पुकार

बच्चों को बच्चा रहने दो बच्चों से

बचपन ना छीनो इन हाथों में किताब हो| शिक्षा इसे ना वंचित करो|

इन कोमल मां के बच्चों के बच्चों से उनकी चंचलता ना छीनो |मंजिल मुश्किल है इनकी पर रास्ता इनसे ना छीनो|

खिलौना उनकी दुनिया है खिलौना इनसे न छीनो आकाश में छूना चाहते हैं धरती इसे ना छीनो|

घर बाहर के झगड़ों में बच्चों को तुम ना गैरों दुनिया उनकी आनंद भरी चंचलता ईने तुम मत छीनो|

बच्चों को बच्चा रहने दो बच्चे से बचपन मत छीनो |बच्चों की अपनी दुनिया है यह दुनिया उनसे मत छीनो|

जयमाला क्लास 7thबी

हिन्दी राजभाषा समिति निरीक्षण, गृह मंत्रालय, (भारत सरकार)

दिनांक: 29.11.2023

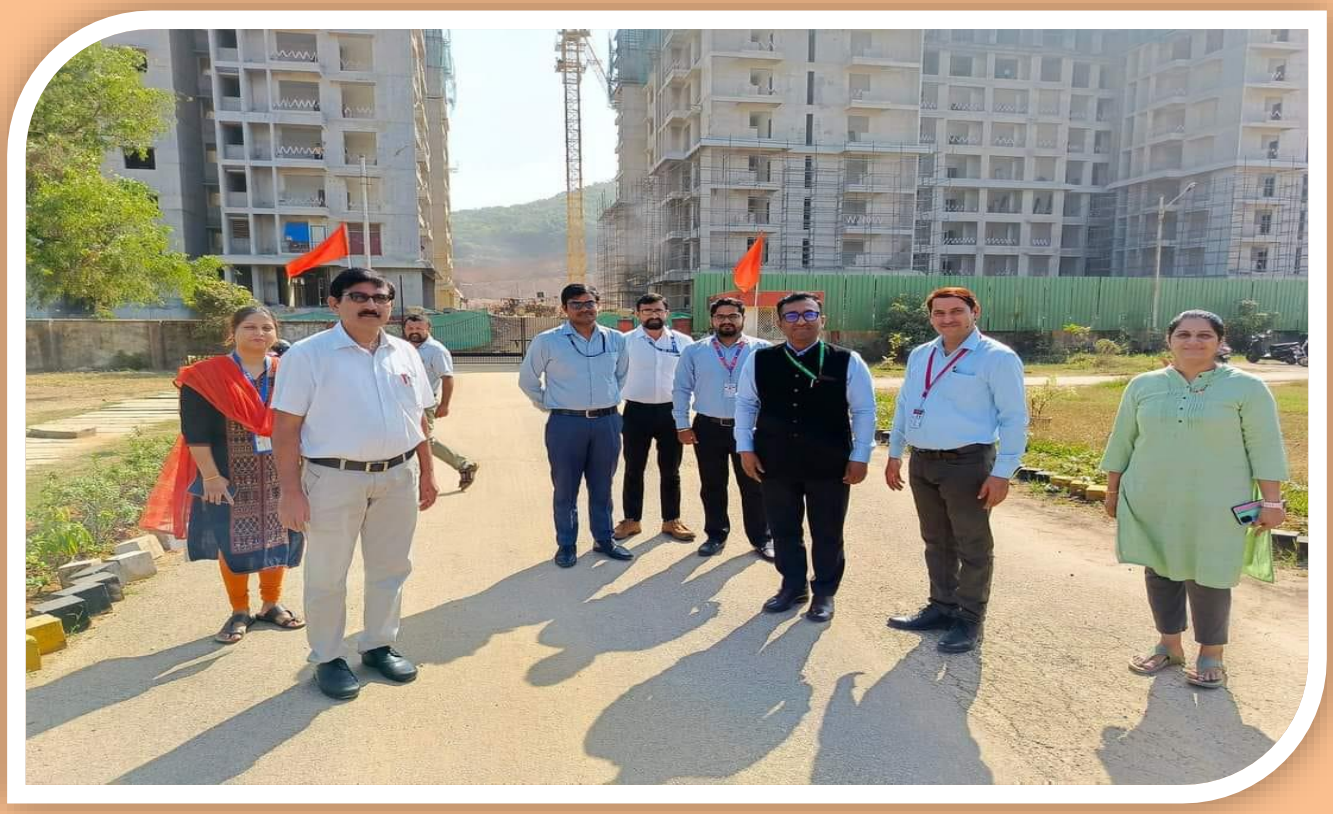

पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय
नौसेना अवस्थान, कारवार
हिंदी राज भाषा

पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय

धन्यवाद